साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
March 2017

टहनियां सुख गयी पत्ते गए झड़

हरीश कुमार

टहनियां सुख गयी पत्ते गए झड़
लग रहा है आया मौसम पतझड़
खुशियों भरी जीवन में
गम की एक साम
हस्ते खेलते उपवन में
ख़ामोशी की गान
छोड़ पुराने वस्त्र
सहकर मौसम की मार
जन जन हो रहा त्रस्त्र
खुशियों का सूरज हुआ अस्त
सब अपने काम में हुए व्यस्त
गर्मी से परस्त
जीवन अस्त व्यस्त
हरे पत्ते सुख झड़ने लगे
बागों से सड़क के किनारे
ऐसा लग रहा जन जीवन सारे
दिन में दिखने लगे तारें
गर्मी ने किया बेहाल
कैसा मौसम कैसा ये साल
सूखने लगे निर्झर
आया मौसम पतझड़